प्रत्येक काम का एक समय

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बेंगलोर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - A Time for Every Purpose)

प्रत्येक काम का एक समय

प्रत्येक काम का एक समय

विषय सूची

1. परमेश्वर की दृष्टि में समय 1

2. समय को पहचाना और बहुमूल्य समझना 7

3. समयों और कालों को समझना 15

4. अपने जीवन को विवेक के अनुसार चलाना 25

5. समय को पुनस्थापित करना 31

1

परमेश्वर की दृष्टि में समय

"हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है। जन्म का सयम, और मरन का भी समय; और बोए हुए को उखाड़ने का भी समय है; घात करने का समय, और चंगा करने का भी समय; ढा देने का समय, और बनाने का भी समय है; रोने का समय, और हँसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है; पत्थर फेंकने का समय, और पत्थर बटोरने का भी समय; गले लगाने का समय, और गले लगाने से रुकने का भी समय है; ढूँढ़ने का समय, और खो देने का भी समय; बचा रखने का समय, और फेंक देने का भी समय है; फाड़ने का समय, और सीने का समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है; प्रेम करने का समय, और बैर करने का भी समय; लड़ाई का समय, और मेल का भी समय है" (सभोपदेशक 3:1-8)।

"उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य समझ नहीं सकता" (सभोपदेशक 3:11)।

"समयों और ऋतुओं को वही बदलता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है" (दानिय्येल 2:11)।

"कितने बज रहे हैं?" यह बार बार दोहराए जाने वाला प्रश्न है जिससे हम बस वाकिफ हैं। आज के तेजी से चलने वाले संसार में ऐसा प्रतीत होता है कि लोग घड़ी की सुई की तरह भाग रहे हैं। बल्कि हममे से अधिकांश लोग अपने जीवनों को घड़ी की सुईयों के समान निर्देशित कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि घड़ी-समय-ने हमारे जीवनों पर अपनी पकड़ बना ली है। सही समय पर सही काम करना, ठीक स्थान पर ठीक

समय पर होना, सही समय पर सही बात कहना–इन सब बातों का हमारे लिए बड़ा अर्थ है। इस के साथ-साथ समय "बचाने" के लिए बहुत अधिक प्रयास किया जाता है।

क्या आपने कभी रुक कर सोचा है कि परमेश्वर के पास भी एक घड़ी है जो संसार के आरम्भ से बल्कि भूतकाल के अनन्त से–अज्ञात समय से वर्तमान तक चल रही है? क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर के पास हम सब के जीवनों के लिए एक घड़ी है? क्या आपने कभी प्रयास किया है अथवा चाहा है कि आप अपने जीवन को केवल अपनी कलाई पर लगी घड़ी अथवा दीवार घड़ी के अनुसार ही नहीं परन्तु परमेश्वर की घड़ी के अनुसार ढालें? आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के समय के अनुसार काम करें और आप किसी विशेष समय में वह कर रहे हैं जो वह चाहता है कि आप करें अथवा आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के द्वारा नियुक्त समय पर वह बनें जो वह चाहता है कि आप बनें?

ये चुनौतीपूर्ण प्रश्न हैं और यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन को परमेश्वर की घड़ी के द्वारा ढालें। यह पुस्तक व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के समय को हमें पहचानने और समझने में सहायक होगी।

परमेश्वर की घड़ी

"अतः उन्होंने इकट्‌ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगा?" उसने उनसे कहा, "उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं" (प्रेरितों के काम 1:6,7)

परमेश्वर के पास एक समय-सारिणी है, एक विशेष क्रम और समय है, जिसमें वह उन योजनाओं को खोलता जो उसने बनाई हैं। वह अपने समय के अनुसार काम करता है। वह बोलता है और अपने वचन को अपने समय में पूरा करता है। वे वचन जिन्हें परमेश्वर बोलता है "अपने समय में पूरे होते हैं" (लूका 1:20)। कुछ ऐसी बातें परमेश्वर

ने कहीं हैं जो “अन्तिम समय के लिए मुहर लगाकार बन्द” की गई हैं (दानिय्येल 12:9)। परमेश्वर की “घड़ी” में इसे “समय की परिपूर्णता” अथवा “ठीक समय” कहा गया है। इसका संदर्भ सबसे उपयुक्त, सही और ठीक समय से है–वह समय जब पूरा हो गया है–ठीक समय। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति के तीसरे अध्याय में अदन की वाटिका में छुटकारा देनेवाले के आने की प्रतिज्ञा की गई थी, फिर भी यीशु इतिहास में हजारों साल बाद आए। इतनी लम्बी प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ी? बाइबल बताती है, “जब समय पूरा हुआ, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा” (गलातियों 4:4)। कायरोज़ “KairoS”–सबसे उपयुक्त समय, इतिहास के ठीक समय में– प्रभु यीशु ने इस संसार में प्रवेश किया। परमेश्वर का अनन्त काल का उद्देश्य भी इसी प्रकार पूरा होगा। “क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे” (इफिसियों 1:9,10)। परमेश्वर ने “एक दिन नियुक्त किया है जब वह संसार का न्याय धार्मिकता से करेगा” (प्रेरितों के काम 17:31)।

अत: हम देखते हैं कि परमेश्वर की एक समय–सारिणी है जिसमें वह विभिन्न घटनाओं को आयोजित करता है, उस प्रभुसत्ता को पूरा करता है जिसे उसने पहले से ठहराया है। यीशु के स्वर्ग जाने से ठीक पहले चेलों ने उस समय के बारे में पूछा जिसमें इस्राएल को पुन: राज्य मिल जाएगा और रोम की दासता से स्वतन्त्रता मिलेगी (प्रेरितों के काम 1:6,7)। प्रभु का उत्तर हम तक पहुँचता है कि पिता ने समयों और कालों को अपने अधिकार में रखा है। यीशु ने “क्रोनोस” (बीतवदवे) और “कायरोज़” (ज्ञंपतवे) के विषय में बात की। ये यूनानी शब्द, “क्रोनोस” समय का दौरान, समय की सीमा अथवा समय की मात्रा बताती है, जबकि कायरोज़ समय की गुणवत्ता अथवा समय का प्रकार बताता है। “क्रोनोस” समय के माप, समय का दौरान–लम्बाई अथवा उसके बीच का अन्तर आदि में प्रयोग किया जाता है। “कायरोज़” विशेष घटनाओं,

उपयुक्त समय बहुत महत्वपूर्ण घटनाओं, अथवा समय के बदलाव में किया जाता है। इसे "समय की परिपूर्णता"-कौन-सी घटना किस समय ठीक रहेगी, के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है।

कुछ ऐसे समय और काल हैं जिन्हें पिता ने "अपने अधिकार में गुप्त" रखा है। बाइबल हमें सिखाती है कि "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ" (व्यवस्थाविवरण 29:29)। यीशु के पुनः आगमन और युग के अन्त के विषय में यीशु ने कहा, "उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा" (मरकुस 13:32,33)। तौभी इसका अर्थ यह नही है कि हम "क्रोनोस" और "कायरोज़" के विषय में नहीं जान सकते हैं जिन्हें परमेश्वर प्रकट करना चाहता है। सम्पूर्ण धर्मशास्त्र में, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग समय और कालों को जाने जिसमें वे रहते हैं, व्यक्तिगत रुप से और सामाजिक रुप से। परमेश्वर अपने लोगों से यह आशा करता है कि वे जाने कि परमेश्वर की घड़ी में इस समय क्या बज रहा है।

बाइबल में "समय"

बाइबल के समय के दृष्टिकोण पर बात करते हुए (बाइबल मरसर शब्दकोष, 1990), साइमन जे. डेवरीज़ कहते हैं, "इब्रानी के समय के विषय में महत्वपूर्ण बात यह है कि वे प्रत्येक नए दिन को अन्य दिनों से अधिक महत्वपूर्ण होने की आशा करते हैं, एक ऐसे दिन की जो गुणवत्तापूर्ण, अधिक उत्पादक, बिना दोहराया हुआ दिन हो जिसमें परमेश्वर अपनी अलौकिकता को किसी विशेष और निर्णायकरूप में दिखा सके। इसीलिए बाइबल में दिनों की विशेषता उनकी विशेष घटनाओं के सन्दर्भ में कही जाती है।" वह आगे कहते हैं कि बाइबल के लोग "विश्वास करते हैं कि उनका परमेश्वर उनसे कही भी, किसी

भी समय, सारा भूमण्डल और सारे इतिहास के समय मिल सकता है। इसी कारण बाइबल में एक उद्देश्य और एक लक्ष्य, एक प्रक्रिया और नियति का अर्थ है।"

बाइबल में समय महत्वपूर्ण तत्व है जहाँ समय का सन्दर्भ विभिन्न प्रकार के समयों में दिया गया है–विभिन्न "कायरोज़" गति। भजनसंहिता एक समय की चर्चा करता है जब परमेश्वर मिल सकता है (भजनसंहिता 32:6), एक बुरा समय (भजनसंहिता 37:18,19), एक कष्ट का समय (भजनसंहिता 44:1) और स्वीकारयोग्य समय (भजनसंहिता 69:13; 2 कुरिन्थियों 6:2)। नए नियम में हम सीखते हैं कि परमेश्वर राष्ट्रों की सीमाऐं निर्धारित करने के अतिरिक्त उनके उठने और गिरने का समय भी नियुक्त करता है (प्रेरितों के काम 17:26,27)। जिस समय में हम रह रहे हैं इसे प्रायः "पिछले दिन" (1 तीमुथियुस 4:1) और "अन्तिम दिन" कहलाते हैं (2 तीमुथियुस 3:1)। इस प्रकार के वाक्य जैसे "समय और काल" (1 थिस्सलुनीकियों 5:1), "इन अन्तिम दिनों में" (इब्रानियों 1:1) और आवश्यकता का समय" (इब्रानियों 4:16) भी पाए जाते हैं। इसलिए समय के विषय में बाइबल का दृष्टिकोण समझना सफल मसीही जीवन के लिए आवश्यक है।

"कायरोज़" को समझना

'कायरोज़' साधारणतया नियुक्त समय, उपयुक्त समय अथवा सही समय है। सामान्य रुप से "कायरोज़" का सम्बन्ध कलेन्डर के वर्षो से जुड़ा हुआ नहीं है। यदि परमेश्वर ने किसी विशेष समय के विषय में नहीं कहा है तो यह "कायरोज़" गतिविधि अन्य विशेष परिस्थितियों पर निर्भर है– स्थितियाँ, परिस्थितियाँ, लोगों, वस्तुओं आदि पर–जो परमेश्वर के द्वारा कहे गए वचनों को पूरा करने हेतु उपयुक्त समय बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्तिगत भविष्यवाणी "कायरोज़" समय पर पूरी होती है। यदि एक व्यक्ति के लिए यह व्यक्तिगत भविष्यवाणी है कि वह एक सफल व्यापारी बनेगा, तब इसका अर्थ यह नही है कि वह एक ही रात में सफल व्यापारी बन जाएगा। यह भविष्यवाणी केवल तभी

पूरी होगी जब उस व्यक्ति के जीवन में कुछ विशेष परिस्थितियाँ होंगी जिन्हें प्रभु ढूँढ़ रहा है। यदि वह व्यक्ति जिसके लिए भविष्यवाणी की गई है, वह जवान व्यक्ति है, तब परमेश्वर आशा करता है कि वह व्यक्ति किसी प्रशिक्षण में जाए अथवा कुछ वर्षो तक काम करे, उससे पहले कि वह अपना व्यापार आरम्भ करे। जब यह जवान व्यक्ति व्यापार आरम्भ कर लेता है, तब भी बहुत वर्ष लग सकते हैं कि उसे वे महान् विचार मिलें जिससे वह धीरे-धीरे अत्यधिक सफल व्यापारी बने। यद्यपि भविष्यवाणी का वचन सच्चा था, लेकिन यह तभी पूरी हुई जब ये सब परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं और यह "कायरोज़" समय आ गया।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग समय और कालों को जाने जिसमें वे रहते हैं, व्यक्तिगत रुप से और सामाजिक रुप से। परमेश्वर अपने लोगों से यह आशा करता है कि वे जानें कि परमेश्वर की घड़ी में इस समय क्या बज रहा है।

2

समय को पहचाना और बहुमूल्य समझना

“इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है” (इफिसियों 5:15-17)।

“अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो” (कुलुस्सियों 4:5)।

पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि हम समय (कायरोज़) को बहुमूल्य समझें। समय को बहुमूल्य समझने को अर्थ है कि हम अपने जीवन के प्रत्येक उपयुक्त क्षण को पहचानें और उसका लाभ उठाएं। ऊपर दिए गए वचन के अनुसार, यह तभी सम्भव होगा जब हम बुद्धिमानी और परमेश्वर की इच्छा की समझ के अनुसार चलेंगे। दूसरे शब्दों में हमें अपने जीवन के बहुमूल्य क्षणों को समझने की योग्यता-सही समय पर सही काम करना-हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा की समझ पर निर्भर है। परमेश्वर ‘क्रोनोज़’ और ‘कायरोज़’ हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए नियुक्त करता है। हममें से प्रत्येक जन के पास “क्रोनोज़” अथवा जीने के लिए नियुक्त समय होता है। परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा दी है, “तेरी आयु मैं पूरी करूँगा” (निर्गमन 23:26)। परमेश्वर की सामान्य इच्छा यह प्रकट करती है कि “हमारे जीवन के वर्ष सत्तर होंगे और अस्सी तक बढ़ सकते हैं” (भजनसंहिता 90:10)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें लम्बी आयु से तृप्त करेगा” (भजनसंहिता 91:16)। सामान्य रुप से, परमेश्वर की सन्तान के पास यह सौभाग्य है कि वह अपनी “पूरी उम्र होकर कब्र में जाए, जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता है” (अय्यूब 5:26)। विशेषरूप से परमेश्वर के पास हमारे व्यक्गित जीवन के लिए समय और

काल नियुक्त है। यही विशेष समय और काल "कायरोज़्" क्षण हमारे जीवन मे पहचानने और उसे बहुमूल्य समझने की आवश्यकता है। हमें अवसर को पकड़े रहना है।

इस समय आपके जीवन में कौन-सा "कायरोज़्" है? आप अपने जीवन के किस काल में हैं? क्या यह समय काम और तैयारी का है? क्या यह समय अध्ययन करने अथवा सिखाने का है? क्या यह समय बाइबल के किसी विशेष क्षेत्र के विषय में सीखने का है? क्या यह समय किसी विशेष सम्बन्ध को बनाने का है? क्या यह समय आपके आराम और आने वाले दिनों के लिए योजना बनाने का है? क्या यह समय रुक कर हाल ही में तेजी से हुई आत्मिक उन्नति के विषय में सोचने का है? क्या आपके लिए यह समय किसी विशेष विषय पर अध्ययन अथवा खोज करने का है? क्या यह समय आपके लिए सेवा करने और अगुवाई करने का है? जब हम अपने जीवन में विशेष समय को पहचान लेंगे, जिसमें हम हैं, तब हम अपने समय को बहुमूल्य समझेंगे और अपने जीवन में इस उद्देश्य को पूरा करेंगे।

एक बार जब प्रभु यीशु यरुशलेम नगर को गए, उसने इस नगर को देखा और रोया। यरुशलेम के ऊपर आनेवाले विनाश को बोलते हुए उसने घोषणा की, "...क्योंकि तूने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना" (लूका 19:41-44)। परमेश्वर ने यरुशलेम में "आने का समय" नियुक्त किया था परन्तु इस नगर के लोग उस बात से अनभिज्ञ थे। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर का एक विशेष समय है जब वह हमारे व्यक्तिगत जीवनों में आता है। जीवन के ऐसे समयों में, परमेश्वर हमारे हृदयों में एक विशेष काम करता है; शायद हमारे जीवन में अपने उद्देश्यों को विस्तार पूर्वक प्रकट करता है, अथवा विशेष निर्देश देता है, अथवा हमारे अन्दर विशेष वरदान डालता है अथवा उसका प्रयोग कर रहा है। परन्तु परमेश्वर के इस भ्रमण का लाभ इस बात पर निर्भर है कि आप किस प्रकार का प्रत्युत्तर देते हैं। यदि हम परमेश्वर के इस भ्रमण के समय से अनभिज्ञ हैं, परमेश्वर हमें लाँघकर निकल

जाएगा। क्या आप वर्तमान में परमेश्वर के भ्रमण और आपके जीवन हेतु योजनाओं के प्रति सावधान और संवेदनशील हैं? आप उसके कामों के प्रति कैसा प्रत्युत्तर दे रहे हैं?

समय और कदम मिलाना

"...यहाँ एक एक विषय और एक एक काम का समय है" (सभोपदेशक 3:17)।

"... क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है" (सभोपदेशक 8:6अ)।

हमें यह समझना है कि प्रत्येक काम का एक सही समय है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि हमारे जीवन की विशेष परिस्थिति में परमेश्वर क्या करना चाह रहा है, परन्तु उतना ही आवश्यक है उस काम को सही समय पर पूरा करना। प्रायः हमें परमेश्वर की ओर से एक विचार, योजना, कार्य अथवा दर्शन मिलता है, और हम शीघ्र ही इसे पूरा होता हुआ देखना चाहते हैं, अथवा हम तुरन्त जाकर इसे पूरा करने लग जाते हैं। मैंने इसे बड़ी कठिनाई से सीखा है कि न केवल परमेश्वर के पास एक योजना है बल्कि उस योजना को प्रकट करने और पूरा करने का भी एक विशेष समय है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम न केवल उसकी योजनाएं और उद्देश्यों को जानें बल्कि उनके पूरा होने के समय को भी समझें। हमें परमेश्वर के समय और कदम के साथ चलना होगा–न तो उससे आगे और न उससे पीछे।

राजा दाऊद के जीवन की दो घटनाओं से यह विषय और स्पष्ट हो जाएगा जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। परमेश्वर ने दाऊद को सारे इस्राएल का राजा नियुक्त किया था। जब दाऊद बालक ही था तब शमूएल नबी ने उसका अभिषेक किया–तेल से अभिषेक करना इस तथ्य को प्रकट करता है कि परमेश्वर ने दाऊद को राजा होने के लिए चुना था। गोलियत को मारने और राष्ट्र का नायक बनने के बाद उसे राजा शाऊल के डर के कारण अपने जीवन को बचाने के लिए भागना पड़ा। दाऊद की खोज की जंगली जानवर की तरह की गई; वह एक भगोड़े की नाई गुफाओं में रहता था। वर्ष बीतते गए परन्तु दाऊद इस पूरे समय में परमेश्वर के

प्रति सच्चा बना रहा। अचानक राजा शाऊल एक युद्ध में मारा गया। जब दाऊद ने यह सुना, वह शाऊल और उसके घराने के प्रति दया से भर गया इसके बाद दाऊद ने प्रभु से पूछा, "क्या मैं यहूदा प्रदेश के किसी नगर में जाऊँ?" यहोवा ने उससे कहा, "हाँ, जा।" दाऊद ने फिर पूछा, "किस नगर में जाऊँ?" उसने कहा, "हेब्रोन में।" दाऊद वहाँ चला गया। तब यहूदी लोग गए, और वहाँ दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो" (2 शमूएल 2:1-4)।

सही समय पर सही काम करने से दाऊद यहूदा के राजा के रुप में पहचाना जाने लगा। शीघ्र ही वह सम्पूर्ण इस्राएल के राजा के रुप में पहचाना जाने लगा। हम जानते हैं कि दाऊद एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ ठीक समय पर कदम से कदम मिला कर चलता था। यद्यपि उसे सिंहासन के लिए नियुक्त किया गया था, फिर भी उसने उसे पाने के लिए जल्दबाजी नहीं की। उसने परमेश्वर को अनुमति दी कि वह अपने समय में योजनाओं को प्रकट करे। दाऊद ने परमेश्वर के साथ एक समय में एक कदम उठाना सीखा था। ध्यान दीजिए कि वह हेब्रोन जाने के लिए कितना सावधान था। परन्तु जब उसने सही समय पर सही कदम उठाया तो सारी बातें उसके पक्ष में होने लगीं। सही समय पर सही कदम उठाने से आप देखेंगे कि आप ऐसे स्थान पर है जहाँ परमेश्वर की योजनाएं और उद्देश्य आपके जीवन में पूरे होंगे।

दाऊद के जीवन में दूसरी घटना बहुत दुर्भाग्यशाली हुई क्योंकि यह प्रकट करती है कि किस प्रकार दाऊद परमेश्वर के साथ सही समय पर सही कदम नहीं उठा पाया और समय के ज्ञान के आभाव में इसके भयंकर परिणाम हुए।

"फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों का नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया। साँझ के समय दाऊद

पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी" (2 शमूएल 11:1, 2)।

यह वर्ष का वह समय था जब राजा अपनी सेना के साथ युद्ध पर जाते थे। तौभी दाऊद ने अपने लोगों को युद्ध में भेजने का फैसला किया और वह स्वयं अपने महल में ही रह गया। वह गलत समय में गलत स्थान पर था। उसने सुन्दर बेतशेबा को देखा और उसके साथ व्यभिचार किया। इस कार्य से उसे बहुत पीड़ा और दुख हुआ। इस असफलता का कारण हम जान सकते हैं कि जब दाऊद को अपने लोगों के साथ युद्ध पर जाना था, वह नहीं गया। उसने एक ऐसा फैसला किया जिसने उसे गलत समय में गलत स्थान पर रखा।

अपने प्रभु यीशु के उस तरीके पर विचार करें जहाँ उसने अपने जीवन को ठीक प्रकार से क्रम में रखा, जैसा कि चारों सुसमाचारों में वर्णन किया गया है, हम देखते हैं वह अपने जीवन के समय के प्रति अपने पिता की इच्छा के प्रति संवेदनशील था। यीशु ने अपनी सेवा आरम्भ करने के लिए तीस वर्षों तक प्रतीक्षा की क्योंकि वह जानता था कि उसका समय अभी नहीं आया है– वह समय जिसे पिता ने उसकी सेवा के लिए ठहराया है (यूहन्ना 2:4)। यीशु ने उन सामर्थी वचनों को यशायाह 61 अध्याय में से पढ़कर अपनी सेवा आरम्भ की। उस भविष्यवाणी के सन्देश को पढ़कर यीशु ने अपने सुनने वालों को घोषित किया, "आज यह वचन पूरा हुआ जब तुमने इसे सुना" (लूका 4:21)। यीशु अपनी सेवा को आरम्भ करने के विषय में परमेश्वर का नियुक्त समय जानता था। उसका सन्देश भी ठीक समय पर था–समय पर बोला गया वचन। उसने पश्चाताप् का प्रचार किया, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। वह नए युग के आरम्भ का प्रचार कर रहा था और उसके सन्देश ने लोगों के ध्यान को उस ओर आकर्षित किया जो उस समय परमेश्वर इस पृथ्वी पर कर रहा था। वह उन बातों

का प्रचार कर रहा था जो उस समय के लिए उपयुक्त था। वह उन बातों से पूरी तरह वाकिफ था जो परमेश्वर उस समय कर रहा था और करने वाला था–वर्तमान और भविष्य में होने वाले परमेश्वर के कामों का उसने, "वह समय आ रहा है" वाक्यों का प्रयोग नए समय के आरम्भ और लोगों के विषय में किए जब लोग आत्मा और सच्चाई से आराधना करेंगे (यूहन्ना 4:21,23) और अपने आनेवाले पुनरुत्थान के विषय में भी (यूहन्ना 5:25)। एक और स्थान पर उसने एक ऐसे आनेवाले समय के विषय में कहा जब वह अपने चेलों से पिता के विषय में दृष्टान्तों में नहीं परन्तु खुल कर बातें करेगा (यूहन्ना 12:31)।

इससे हम सीखते हैं कि इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने, उसके चलन और कामों को जन्म देने का विशेष समय है। यीशु अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय से भली–भाँति परिचित था– यह उसके लिए कोई आश्चर्य नहीं था। उसे मालूम था कि अब वह समय आ गया है जब उसके चेले भाग जाएंगे और उसे अकेला छोड़ देंगे (यूहन्ना 16:32) और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा (यूहन्ना 13:1;17:1)। बल्कि उसने अपने जीवन को उस दृष्टि से देखा कि उसके क्रूस पर चढ़ने का समय अभी नहीं आया है (यूहन्ना 16:32)। बाइबल यह भी कहती है, "...किसी ने उस पर हाथ नहीं डाले क्योंकि उसका समय अभी तक नहीं आया था (यूहन्ना 7:30; 8: 20)। अपने स्वामी के जीवन के इस सम्पूर्ण सन्दर्भ में हम समझते हैं कि उसने अपने जीवन को परमेश्वर की योजनाओं और समय को ध्यान में रखते हुए जीया था। यह हमारे लिए चुनौती है कि हम भी उसके कदमों पर चलें।

हम अपने जीवन को कैसे बिता रहे हैं? क्या हम अपने पिता के साथ कदम और समय में चल रहे हैं और उन योजनाओं में जो उसके पास हमारे लिए हैं? हममें से कुछ लोगों की आदत है कि वे उससे आगे दौड़ रहे हैं। हमें ऐसे गुण को विकसित करने की आवश्यकता है जहाँ हम मात्र उस पर निर्भर ही न रहें बल्कि उसकी प्रतीक्षा भी करें। बाइबल

सिखाती है, "परमेश्वर उसके लिए काम करता है जो उसकी प्रतीक्षा करता है" (यशायाह 64:4)। मेरी किशोरावस्था में, जब पहली बार प्रभु ने मेरे जीवन में काम करना आरम्भ किया, तब मैंने कई बार सेवा के विषय में जल्दबाजी की। जी हाँ, परमेश्वर दयालु है और उसे मालूम था कि मैं उन बातों से अनभिज्ञ था जो इस पुस्तक में लिखी हैं, और इनके द्वारा मुझे सीखने में सहायता की। परन्तु उन दिनों में भी मैंने परमेश्वर का पवित्र हियाव और पहल को देखने का आनन्द प्राप्त किया। उन आरम्भिक दिनों में से अनन्तकालीन फल प्राप्त हुए। इन सत्यों को जानकर जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं, अब यह हमारी जिम्मेदारी बन गई है कि हम परमेश्वर के समय के बारे में सीखें। उन बातों में जिनमें प्रभु हमारी अगुवाई कर रहा है, चाहे वे हमारे व्यक्तिगत जीवन, सेवा अथवा व्यवसाय के विषय में हों, हमें उसकी योजना और समय दोनों को जानने का प्रयास करना चाहिए। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का शिक्षा देने और तैयार करने का एक समय है। परमेश्वर अपने "युद्ध के लोगों" को "सेवा में प्रशिक्षण" देता है। कभी-कभी हम डर के कारण कुछ कार्यक्रमों, स्थानों अथवा अनुभवों को नजरअन्दाज करना चाहते हैं। या तो हम उत्तर देने से अथवा अनजानी बातों से डरते हैं। परन्तु कभी- कभी परमेश्वर चाहता है कि हम ऐसी परिस्थितियों में जाएं और विजय प्राप्त करें, सीखें और इस प्रक्रिया में प्रशिक्षित हो जाएं। ऐसी परिस्थितियाँ जीवन में रुकावट और अनावश्यक देर करनेवाली प्रतीत हो सकती हैं, परन्तु परमेश्वर इन्हें हमारे लाभ में बदल देता है।

उन लोगों के लिए बहुत आश्चर्य होता है जो "खच्चरों के समान" हैं। ये वे लोग हैं जो भूतकाल, जाना हुआ और पहिचाने हुए को छोड़ कर-परमेश्वर के नए चलन जो हमारे लिए नए और अनजाने होते है और हमें इनमें प्रवेश करने के लिए विश्वास और हियाव की आवश्यकता होती है।

हमें यह जानने की आवश्यकता है कि आज परमेश्वर पृथ्वी पर क्या कर रहा है। हममें से उन लोगों को जो अगुवाई की सेवा में हैं,

हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन लोगों को जो हमें सौंपे गए हैं उनको परमेश्वर के द्वारा नियुक्त समय, उन क्षेत्रों में जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किए हैं, लेकर चलें।

प्राय: हमें परमेश्वर की ओर से एक विचार, योजना, कार्य अथवा दर्शन मिलता है, और हम शीघ्र ही इसे पूरा होता हुआ देखना चाहते है, अथवा हम तुरन्त जाकर इसे पूरा करने लग जाते हैं। मैंने इस बड़ी कठिनाई से सीखा है कि न केवल परमेश्वर के पास एक योजना है बल्कि उस योजना को प्रकट करने और पूरा करने का भी एक विशेष समय है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम न केवल उसकी योजनाएं और उद्देश्यों को जाने बल्कि उनके पूरा होने के समय को भी समझें। हमें परमेश्वर के समय और कदम के साथ चलना होगा–न तो उससे आगे और न उसके पीछे।

3

समयों और कालों को समझना

“इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे कि इस्राएल को क्या करना उचित है” (1 इतिहास 12:32अ)।

उपयुक्त पद एक विशेष प्रकार के लोगों के विषय में बताता है “जिसे समय की समझ” थी। वे ‘कायरोज़’ को समझते थे। उन्हें मालूम था कि किस समय क्या करना है। समय और कालों को समझने से हमें यह पता चलता है कि कब, क्या करना है। हमारे जीवनों में विभिन्न घटनाएं होती हैं जिनमें हमें परमेश्वर का समय खोजना होता है–उदाहरण के लिए सेवा को आरम्भ करना, विवाह, व्यवसाय में बदलाव करना, सुसमाचार हेतु स्थान को बदलना अथवा नए व्यापार में प्रवेश करना। हम कुछ कालों के विषय में विचार करेंगे जिन्हें बाइबल में विशेष रूप से पहचाना गया है।

परमेश्वर के नए चलन का समय

हम पहले कह चुके हैं कि इस पृथ्वी पर परमेश्वर के काम, चलन और क्रियाएं सम्पन्न होने का एक विशेष समय होता है। परमेश्वर गड़बड़ी के तरीके से काम नहीं करता है। बल्कि इस पृथ्वी पर अपने नए काम को करने के लिए उसने एक विशेष समय नियुक्त कर रखा है। बहुत से स्थानों पर यीशु ने इसका समर्थन करते हुए कहा “घड़ी आ पहुँची है।” यीशु मसीह के अनुसार, “एक समय आएगा जब लोग उसकी आराध ना आत्मा और सच्चाई से करेंगे (यूहन्ना 4:21,23)। हम इसी समय में रह रहे हैं। आगे, परमेश्वर के पुत्र के द्वारा शैतान के नाश होने का समय भी इतिहास में नियुक्त किया गया है। जब यीशु को यह मालूम हुआ कि नियुक्त समय आ गया है, उसने घोषणा की, “अब इस संसार का न्याय

होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा" (यूहन्ना 12:31)।

हम वर्तमान में परमेश्वर के आत्मा के अधिकाई से उण्डेले हुए समय में रह रहे हैं जिसकी चर्चा योएल 2:28 और प्रेरितों के काम 2:17 में की गई है, "परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा।" यह परमेश्वर के आत्मा का अधिकाई से उण्डेले जाने का समय परमेश्वर के कैलेण्डर में नियुक्त किया गया है जो "अन्तिम दिनों" के रुप में जाना जाता है–वे दिन जिनमें हम रह रहे हैं।

अन्य बहुत–सी बातें हैं जिनको हमें इस पृथ्वी पर परमेश्वर के चलन और कामों के विषय में समझना है।

पृथ्वी पर किसी भी नियुक्त समय में आत्मा के एक से अधिक "चलन" हो सकते हैं

उदाहरण के लिए जिन दिनों में हम रह रहे हैं वे केवल आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने के ही दिन नहीं हैं परन्तु आत्मा के उण्डेले जाने को प्राप्त करने का भी समय है। यह आवश्यक है कि हम इन बातों को जानें। बहुत से लोग इस सत्य से अनजान हैं इसलिए उन्होंने अपने आप को सीमित कर लिया है–इसलिए उनके जीवनों में परमेश्वर के काम–बहुतों में से कुछ ही हो पाते हैं, और उन कामों से भिन्न हैं जिन्हें परमेश्वर इस पृथ्वी पर कर रहा है। तब वे उस अधूरे ज्ञान और दृष्टिकोण के सहारे जीते हैं मानो कि वही एक काम है जिसे परमेश्वर कर रहा है, जो निश्चय ही एक अच्छा कदम नहीं है। मसीही होने के नाते हमें यह मालूम होना चाहिए और उन सब बातों के लिए खुला होना चाहिए जिन्हें परमेश्वर कर रहा है। हमें उन सब बातों के प्रति सजग होना चाहिए जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवन के द्वारा करना चाह रहा है। परमेश्वर जो कुछ कर रहा है उनमें से हम कुछ की चर्चा कर रहे हैं–हमने देखा है कि इन दिनों में 'वचन का अभियान' है जहाँ वचन की

शिक्षा और विभिन्न विषयों पर बहुत बल दिया जा रहा है, जैसे विश्वास, ईश्वरीय चंगाई, छुटकारा, सम्पन्नता आदि। तब उसी के समानान्तर परमेश्वर का एक और चलन है जिस पर बल दिया जा रहा है, संसार में मिशन का काम, कलीसिया की वृद्धि, स्तुति और आराधना, परिवार सामाजिक/राजनैतिक कदम, आत्मिक युद्ध, भविष्यवाणी और प्रेरिताई। आप इन बातों के प्रति खुले रहे, जाने हुए से आगे बढ़ें और उन विभिन्न कामों को पकड़ लें जिन्हें परमेश्वर कर रहा है। अपने आपको और परमेश्वर के काम को अपने जीवन में सीमित न करें, और उसके प्रति सहनशील बने जो भिन्न 'भाषा' बोलता है क्योंकि वह परमेश्वर के भिन्न काम में लगा हुआ है।

परमेश्वर का प्रत्येक चलन एक विशेष उद्देश्य को पूरा करता है

यीशु ने वर्तमान समय में आत्मा के उण्डेले जान के उद्देश्य स्पष्ट किये हैं, "पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों के काम 1:8)। हमें यह देखना और समझना होगा कि यह परमेश्वर क्यों कर रहा है। अन्यथा आप उसके 'आकार' में तो शामिल होंगे लेकिन 'उद्देश्य' को खो देंगे। इससे हमें अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के प्रयासों का मूल्यांकन करने में भी सहायता मिलेगी।

परमेश्वर का एक चलन दूसरे चलन का स्वागत करता है

परमेश्वर के विभिन्न चलन आपस में विरोधी नहीं होते बल्कि उन सब बातों में जुड़ते जाते है जिन्हें परमेश्वर कर रहा है। उदाहरण के लिए, पवित्रात्मा का उण्डेला जाना न सिर्फ हमें गवाह बनाता है परन्तु हमें आत्मा और सच्चाई से आराधना करने के योग्य भी बनाता है। आत्मा और सच्चाई से की गई आराधना न केवल पिता को प्रसन्न करती है, बल्कि शत्रु के विरोध में एक हथियार भी है जिससे क्षेत्रों में पूरे सुसमाचार को फैलाने में मदद मिलती है। अत: उनके साथ मिलें और सीखे जो भिन्न काम कर रहे हैं, ताकि आपका जीवन उपयोगी बन सके।

यदि लगातार परमेश्वर के पुराने कामों में बने रहेंगे तो मनुष्य गलती कर सकता है

यद्यपि परमेश्वर के पिछले चलन को जानना महत्वपूर्ण है, हम अपने आप को भूतकाल में जीने की अनुमति नहीं देंगे। इस्राएलियों की प्रतिज्ञा किए गए देश की यात्रा पर विचार करें। कई बार वे निरुत्साहित हुए। वे कुड़कुड़ाए और परमेश्वर और मूसा के विरोध में शिकायत की। ऐसा ही एक समय पर परमेश्वर ने उनके 'तम्बुओं' में जहरीले साँप भेजे और बहुत से लोग मर गए। जब लोगों ने पश्चाताप् किया तब परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह पीतल का साँप बना कर लट्ठे पर लटका दे ताकि "जिन्हें साँपों ने काटा है वे उसे देखें और बच जाएं (गिनती 21:1-9)। और ऐसा ही हुआ। इतिहास की कई शताब्दियों के बाद, हम देखते हैं कि इस्राएलियों ने पीतल के साँपों के सामने धूप जलाई जिन्हें मूसा ने बनाया था और इसकी आराधना की (2 राजा 18:4)। परमेश्वर ने हिजकिय्याह राजा को खड़ा किया कि वह परमेश्वर के लोगों के बीच से इस घातक बुराई को नाश करे। आज भी बहुत से लोग हैं जो इस मूर्तिपूजा के मार्ग को कस कर पकड़े हुए हैं, केवल परमेश्वर के पुराने चलन के आधार पर। इससे गलती और धोखा होता है और परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता है।

परमेश्वर के नए चलन में कदम न रखना मँहगा पड़ सकता है

कई बार चूँकि हम एक विशेष 'तरीके' को पकड़े रहते हैं जिसमें हमने परमेश्वर को काम करते और अपनी उपस्थिति प्रकट करते देखा है तब हम उन्हीं तरीकों को पकड़े रहते हैं जिसमें परमेश्वर काम करता है। तब हम नए तरीके में जिसमें परमेश्वर वर्तमान में काम करता है, प्रवेश करने में असफल होते हैं। पुराने नियम के महान अगुवे मूसा के विषय में विचार करें। एक समय था जब परमेश्वर ने कहा कि चट्टान को मार, और उसने ऐसा किया, और इस्राएलियों की प्यास बुझाने के लिए पानी निकल आया (निर्गमन 17:1-7)। तब कुछ वर्षो के बाद मूसा के सामने इसी प्रकार की परिस्थिति आई जब लोगों को पानी की आवश्यकता

पड़ी। इस बार परमेश्वर ने उसे चट्टान पर मारने की बजाय उससे बातें करने का कहा। मूसा ने इस्राएलियों की शिकायतों से दुखी होकर चट्टान से बातें करने के बजाए उस पर लाठी मारी। उसने उस पर दो बार लाठी मारी (गिनती 20:1-13)। जी हाँ, पानी निकल आया, परन्तु परमेश्वर ने मूसा को अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के लिए जिम्मेदार ठहराया। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा ने जो पहले किया था वह करने के लिए उसे ज्यादा आसानी लगी और वह जानता था कि यही उपाय काम करेगा। वह चट्टान से बातें करने के पक्ष में नहीं था। शायद वह यह भूल गया था कि इस चमत्कार के पीछे परमेश्वर का हाथ था न कि उसकी लाठी। मूसा को अपने अविश्वास के लिए भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ा। क्या हम उन नए तरीकों के लिए खुले हैं जिनमें परमेश्वर काम करना चाहता है, यद्यपि अन्तिम परिणाम एक जैसे ही क्यों न हों?

दर्शन के पूरा होने का एक समय है

"यहोवा ने मुझ से कहा, "दर्शन की बातें लिख दे; वरन् पटियाओं पर साफ़ साफ़ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएँ। क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन् इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी" (हबक्कूक 2:2,3)।

प्रत्येक वचन जिसे परमेश्वर आपके हृदय और जीवन में बोलता है उसके फलवन्त होने का एक समय है। प्रक्रिया वैसी ही है जैसे एक स्त्री एक बच्चे को जन्म देती है। गर्भधारण की धारणा है-परमेश्वर आपके हृदय में अपना स्वप्न, अपना विचार, अपनी योजना और अपने तरीके रखता है। तब वह विकास का समय आता है जहाँ आप एक व्यक्तिगत रुप से और वे सब बातें एक साथ जुड़ती हैं जिससे योजना पूरी होती है। तब अन्त में जन्म का समय आता है- दर्शन वास्तविकता बन जाती है। परन्तु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि एक प्रतीक्षा का समय है-एक निश्चित समय-दर्शन के समय से लेकर उसके पूरे होने तक। यही वह समय है जब परमेश्वर दर्शन को पूरा करने के लिए आधारभूत

काम करने के लिए हमें योग्य बनाता है। हमें अपने आज के काम के लिए परिश्रमी होना है, यह निश्चय जानते हुए कि दर्शन अवश्य ही पूरा होगा। इस प्रतीक्षा के समय परमेश्वर उन सब बातों को तैयार कर रहा है जिनकी आवश्यकता है–लोग, स्थान, वस्तुएँ–जिनके द्वारा हम दर्शन को पूरा कर पाएंगे। जब हम तैयार हैं और सब बातें एक साथ मिल चुकीं हैं तब 'कायरोज़' गति आती है–वह समय जब दर्शन पूरा होगा।

फल का आनन्द उठाने का समय है

"वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है" (भजनसंहिता 1:3ए)।

फल अपनी ऋतु में लगता है। इसका अर्थ यह है कि एक समय है जब हम अपने परिश्रम का फल देख सकते हैं और उसका आनन्द उठा सकते हैं। हमने से कुछ लोग विशेष क्षेत्र में परिश्रम कर रहे हैं जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है। प्रायः हम निराश हो जाते हैं जब हम तुरन्त फल नहीं देखते अथवा अपने अपेक्षित समय में फल नहीं देखते। उस समय फल देखना जब फल का समय नहीं है तो निराशा होगी। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि फल बढ़ने और पकने का समय नियुक्त किया गया है। जैसे-जैसे हम परिश्रम करते हैं, हम फसल के प्रभु की ओर देख सकते हैं क्योंकि वही है जो अपने समय में वृद्धि करता है।

परखे जाने और परीक्षा का एक समय है

"जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके पास से चला गया" (लूका 4:13)।

"इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको" (इफिसियों 6:13)।

कुछ ऐसे समय और काल हैं जिन्हें शैतान "उपयुक्त समय" समझाता है जब वह एक विश्वासी के विरुद्ध अपनी युक्तियाँ बनाता है।

शैतान अपने उपयुक्त समय पर आक्रमण करने की योजना बनाता है। इफिसियों में इसे "बुरे दिन" के नाम से पुकारा गया है। ये ऐसे समय होते हैं, जब हम किसी कारणवश जोखिम के चलते अथवा शत्रु के लिए कोई द्वार खुलें छोड़ देते हैं। यीशु इसे "परीक्षा का समय" कहते है (लूका 8:13)। अत: हमें "सावधान, सचेत और चौकस" रहने की आवश्यकता है (1 पतरस 5:8)। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारे विरोध में शैतान की कार्यविधियों का एक विशेष समय है। ऐसे समय भी होंगे जब युद्ध बहुत घमासान और थकाने वाला होगा अन्य समयों की अपेक्षा। फिर भी हम जानते हैं कि हम उसका सामना करके शैतान के प्रत्येक कार्य को नष्ट कर सकते हैं। सामान्यत: शैतान के ऐसे घमासान युद्ध इस बात का संकेत देते हैं कि हम बड़ी विजय प्राप्त करने ही वाले हैं। समय के प्रति सम्वेदनशील होने के कारण जिनमें से होकर अन्य विश्वासी जा रहे हैं, हमें यह हियाव होगा कि हम ऐसे समय में उन के साथ खड़े हों और उनकी सहायता करें। परमेश्वर ने "कष्ट के समय" (भजनसंहिता 41:1), और "बुरे समय में" (भजनसंहिता 37:18,19) सहायता करने की प्रतिज्ञा की है।

फसल काटने का समय है

"वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। उन्होंने मूसिया के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया" (प्रेरितों के काम 16:6,7)।

हमारा परमेश्वर फसल का परमेश्वर है। सारे राष्ट्र उसके फसल के खेत हैं। वह अपनी प्रत्येक फसल को जानता है जब वह पक जाती है, क्योंकि वे सब एक साथ नहीं पकती हैं। हम पौलुस और उसके सहकर्मियों के अनुभवों के बारे में जानते हैं जिन्होंने कुछ विशेष क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार करने का प्रयास किया, परन्तु पवित्रात्मा ने उन्हें अनुमति नहीं दी। बहुत से कारण हो सकते हैं कि कोई विशेष क्षेत्र सुसमाचार के लिए तैयार नहीं है। शायद वहाँ के लोग सुसमाचार स्वीकार करने के

लिए तैयार नहीं हैं। अतः प्रार्थना और मध्यस्थता के द्वारा काम करना है। शायद उस क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करने के लिए सेवक अभी तैयार नहीं हैं, अथवा शायद कभी बाद में सुसमाचार सुनाने पर बहुत बड़ी फसल उत्पन्न होगी। चाहे कोई भी बात क्यों न हो, हमें सम्वेदनशील होना है। जब हम परमेश्वर की फसल के खेत में प्रवेश करते हैं, तो हमें पवित्रात्मा की अगुवाई का अनुसरण करके उसके साथ कदम और समय मिला कर चलना चाहिए।

परमेश्वर के भवन को बनाने का समय

"...यहोवा का वचन, हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुँचा। सेनाओं का यहोवा यों कहता है: ये लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है।" फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुँचा, क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है?" (हाग्गै 1:1-4)।

"पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न हूँगा, और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है" (हाग्गै 1:8)।

पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के समय को खो दिया और अनुचित कामों के लिए वे दोषी ठहराए गए। उन्होंने परमेश्वर के भवन को नहीं बनाया और अपने-अपने घरों को बनाने में व्यस्त रहे। आज के युग में परमेश्वर अपना भवन बना रहा है जो "ईंट और गारे" का नहीं है, परन्तु "जीवित पत्थरों" का है। यह कलीसिया है, यीशु ने कहा, जिसे वह बनाएगा और अपने वरदानों की सेवाओं से भरेगा जिसे वह सन्त कहता है (इफिसियों 4:7-11)। हम ऐसे समय में रह रहे है जहाँ अधिक से अधिक लोग परमेश्वर के भवन को बनाने की आवश्यकता महसूस करते हैं न कि अपने अस्थाई घरों को बनाने की। एक समय आ रहा है जब परमेश्वर अपने लोगों को बुलाएगा जैसे पुराने समय में बुलाया कि अपने घरों को बनाना बन्द करें (उनकी अपनी व्यक्तिगत विलासिताऐं और उनके निजी मसीही संस्थान) और कलीसिया

बनाने में अपना धन निवेश करें। इसका अर्थ है कि अब हमें बलिदानपूर्ण नई जीवनचर्या, उदारता से देने और निर्भय होकर चलने के लिए तैयार होना चाहिए।

शान्त वर्ष

"परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ, तो न मैंने मांस और लहू से सलाह ली, और न यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहाँ से दमिश्क को लौट आया। फिर तीन वर्ष के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम गया, और उसके पास पंद्रह दिन तक रहा। चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम को गया, और तीतुस को भी साथ ले गया" (गलातियों 1:15-18; 2:1)।

सम्पूर्ण बाइबल में देखते हैं कि बहुत से परमेश्वर के लोगों ने –उन अगुवों ने जिन्हें परमेश्वर ने खड़ा किया– बहुत से "शान्त वर्ष" अपनी तैयारी में गुजारे। हम उन्हें "शान्त वर्ष" इसलिए कहते हैं कि उस दौरान उनके कामों का वर्णन अधिक नहीं मिलता है। उस दौरान वे उस काम के लिए तैयार और प्रशिक्षित किए जा रहे थे जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था। तब उन शान्त वर्षों के अन्त में परमेश्वर ने उन्हें महान् सेवा में लगाया। हम यह विशेष कर पौलुस के जीवन में देखते हैं। उसने उद्धार प्राप्त किया और प्रेरित कहलाया। परन्तु उसने बहुत वर्षों के बाद प्रेरित के अभिषेक की पूर्णता: में प्रवेश किया। उसने उद्धार पाने के बाद बहुत से शान्त वर्ष अरब में बिताए। लगभग 10 वर्षों के बाद उसने अन्ताकिया की कलीसिया में एक शिक्षक के रूप में सेवा आरम्भ की। लगभग तीन वर्षो के बाद पवित्रात्मा ने उसे बुलाया कि वह अपनी प्रेरिताई की सेवा आरम्भ करे (प्रेरितों के काम 13:1-3)। यही बात हम अपने प्रभु यीशु में देखते हैं कि उसने अपनी सार्वजनिक सेवा आरम्भ करने से पहले 30 शान्त वर्ष बिताए। यूसुफ ने 13 वर्षों तक प्रतीक्षा की, मूसा ने 40 वर्षों तक प्रतीक्षा की और सूची बनती जाती है। यह जानना

महत्वपूर्ण है कि वे शान्त वर्ष किसी प्रकार भी बेकार के वर्ष नहीं हैं। बल्कि ये वर्ष तैयारी के वर्ष हैं जिनमें एक व्यक्ति उन सब बातों को सीखता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया है। यह तैयारी दूसरे व्यक्ति की तैयारी के तरीके से बिल्कुल भिन्न हो सकती है। परमेश्वर का प्रशिक्षण संस्थान प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक दर्जी की तरह होता है। हममें से बहुत से लोग अभी प्रशिक्षण के काल में हैं। अभी जो हम कर रहे हैं वह आने वाले समय के लिए एक आधार है। अतः काम के प्रति विश्वासयोग्य रहें और सबसे अधिक, सीखने, प्रशिक्षित होने और तैयारी होने में।

4

अपने जीवन को विवेक के अनुसार चलाना

“बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है”(सभोपदेशक 8:5ब, 6अ)।

“उसने भीड़ से भी कहा, “जब तुम बादल को पश्चिम से उठते देखते हो तो तुरन्त कहते हो कि वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है; और जब दक्षिणी हवा चलती देखते हो तो कहते हो कि लूह चलेगी, और ऐसा ही होता है। हे कपटियो, तुम धरती और आकाश के रूप रंग में भेद कर सकते हो, परन्तु इस युग के विषय में क्यों भेद नहीं जानते? (लूका 12:54-56)।

एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी काम का सही समय और सही तरीका समझ लेता है। प्रत्येक बात और काम का-सेवा को आरम्भ करना, विवाह, व्यवसाय में बदलाव, सुसमाचार के लिए स्थान बदलना अथवा नए व्यापार में प्रवेश करना-एक सही समय है और सही तरीका भी (सही काम करने का) है। परमेश्वर ने हमें बुद्धिमान होने के लिए बुलाया है-ऐसे लोग जो समय और न्याय को समझ सकें।

अपने जीवन में (व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रुप से) समयों और कालों को पहचानने के साथ-साथ हमारी जिम्मेदारी होती है कि हम उचित कदम उठाएं। पौलुस ने लिखा है, “समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है...; रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को त्याग कर ज्योति के हथियार बाँध लें। जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें ...” (रोमियों 13:11-13)। चूँकि हमें मालूम है कि यह कौन-सा समय है। अतः हमें उत्साहित किया गया है कि हम उसके साथ जीएं। विवेकशील लोग वे हैं जो अपने जीवन को स्पष्ट समझ के अनुसार चलाते हैं। ये वे लोग

है जो "ठीक समय पर ठीक बात" कहना जानते हैं (नीतिवचन 15:23) क्योंकि वे परमेश्वर की वाणी को सुनने के लिए अपने आपको अनुशासित करते हैं (यशायाह 50:4,5)। वे परमेश्वर की सेवा के लिए सदैव तैयार रहते हैं। वे "समय और असमय तैयार रहते हैं" (2 तीमुथियुस 4:2)। परमेश्वर उनसे कभी भी मिल सकता था क्योंकि वे अपने समय की, जिसमें वे रहते थे आकस्मिकता समझते थे। इसलिए लगातार तैयारी में अनुशासित जीवन जीते थे। वे ऐसे लोग हैं जो भलाई करने से नहीं थकते और हिम्मत नहीं हारते क्योंकि वे जानते हैं कि वे "ठीक समय में" कटनी काटेंगे (गलातियों 6:9)। वे ऐसे लोग हैं जो नम्रता में जीते और चलते हैं। वे मनुष्यों की प्रशंसा नहीं चाहते क्योंकि वे जानते हैं कि "ठीक समय" पर परमेश्वर उन्हें उठाएगा (1 पतरस 5:5,6)। हम अपने जीवन को कैसे निर्देशित करते हैं? क्या हम परमेश्वर की घड़ी के अनुसार जीते हैं कि समय और कदम मिला कर उसके साथ चलें? अथवा हम यूँ ही जीवन जी रहे हैं क्योंकि हम अन्य लोगों को जो करते देख रहे हैं तो हम भी कर रहे हैं? आईए, हम अपने जीवनों को विवेकपूर्ण-अपनी प्राथमिकताओं को पुनः आदेशित करके, अपने कार्यक्रमों को बदलकर अपने जीवन को सुधार कर परमेश्वर के समय और कालों के अनुसार चलें जिनमें से होकर वह हमें ले जा रहा है।

समय को पहचानना कुछ इस प्रकार है मानो वर्तमान परिस्थितियों को देखकर आप मौसम के विषय में बता देते हैं। यीशु ने इसी तुलना का प्रयोग करके अपने पीछे आनेवाली भीड़ को डाँटा। लोग बादलों को और हवा की दिशा को देखकर मौसम के विषय में भविष्यवाणी करते थे। फिर भी वे "समय को नहीं पहचान" पाए। इसी उदाहरण को सामने रखते हुए हम कुछ टिप्पणी करेंगे जिनमें हमें अपने समयों और कालों को समझने में सहायता मिलेगी जिनमें से होकर परमेश्वर हमें ले जा रहा है। समयों और कालों को पहचानने के लिए मुख्य कुँजी है ध्यान से देखना।

अपने अन्दर परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानें

आपके अन्दर काम करते हुए परमेश्वर अपनी योजनाऐं और उद्देश्य जीवन में प्रकट करता है। वह अपने आत्मा और वचन के द्वारा आपके अन्दर तीव्र इच्छाऐं, स्वप्न और आशाऐं उत्पन्न करता है। आप एक ज्वलन्त इच्छा देखेंगे जो आपके अन्दर होगी-खोए हुए तक पहुँचना, उसके वचन की शिक्षा देना, एक व्यापारी बनना आदि-जो आपके अन्दर जलती रहेगी। यह परमेश्वर ही है जो आपसे बात कर रहा है। परमेश्वर के ऐसे कामों के विषय में देखते रहें।

अपने जीवन की स्थितियाँ और घटनाओं को पहचानें

आपके समय, आपके जीवन की घटनाऐं परमेश्वर के हाथों में हैं (भजनसंहिता 31:15)। घटनाऐं यूँ ही नहीं हो रहीं हैं। इसको समझें, कई बार परमेश्वर ही आपके जीवन में विशेष प्रकार की घटनाओं और स्थितियों को होने देता है। इन घटनाओं के द्वारा परमेश्वर आपसे कुछ कहना चाहता है, जो आपके मार्ग में आ रहीं हैं। शायद यह स्वर्गीय नियुक्ति है कि आप परमेश्वर के जन से मिलें अथवा एक बड़े संस्थान के अध्यक्ष से मिलें। यह एक विशेष काम में संलग्न होने, एक विशेष सन्देश को सुनने जो प्रचार किया जा रहा है, अथवा एक मित्र की टिप्पणी सुनने का अवसर हो सकता है। परमेश्वर आपके जीवन की सामान्य घटनाओं के द्वारा बोल रहा है। जब वह बोल रहा है तो उसे जानने के लिए सम्वेदनशील बनें (और जब वह नहीं बोल रहा है तब भी) और ध्यान से देखें कि वह क्या कह रहा है।

परमेश्वर के आत्मा के चलन को निकटतम् होने वाली घटनाओं के साथ मिलाकर कदम उठाऐं

यदि आप सड़क पर चल रहे हैं और आप आकाश में काले घने बादल देख रहे हैं और आपको बारिश की खुशबू आने लगी है और पहली बूँदे पड़ने लगी हैं, तो आप यूँ ही नहीं खड़े रहेंगे और भीगते रहेंगे। आप छाता तानेंगे अथवा कहीं बचाव के स्थान में जाएंगे। इसी प्रकार यदि आप पवित्रात्मा की अगुवाई और अपने जीवन की परिस्थितियों के प्रति

सम्वेदनशील हैं, तब आपको इन दोनों घटनाओं को लगतार जोड़कर कदम उठाने की आवश्यकता है।

अपने जीवन के कालों के प्रति सम्वेदनशील रहें

वे लोग जो संसार के ऐसे भागों में रहे हैं जहाँ तापमान अपनी चरमसीमा पर रहता है, वे जानते हैं कि उन्हें प्रत्येक मौसम में कैसे कपड़े पहनने हैं। जाड़ों के दिनों में वे मोटे गरम कपड़े निकालेंगे और गर्मियों में बिल्कुल हल्के कपड़े पहनेंगे। दूसरे शब्दों में हमें अपने कपड़ों को पहनने के तरीकों को मौसम की स्थिति के अनुसार ढालना है जिसमें परमेश्वर हमें ले जा रहा है।

परमेश्वर आपको तैयारी के काल में ले जाएगा

हम सब जानते हैं कि परमेश्वर हमें उस काम के लिए तैयार करता है जिसके लिए उसने हमें बुलाया है। हम यह समझने में असफल होते हैं कि तैयारी के कई काल हो सकते हैं। उदाहरण के लिए आप तैयारी के एक काल से होकर गुजरते हैं जहाँ आप नई दक्षता और योग्यताऐं सीखते और विकसित करते हैं। आप ऐसा मानते हैं कि जब यह पूरा हो जाएगा तब परमेश्वर आप को उस स्वप्न और योजना को पूरा करने के लिए भेजेगा जो आपके हृदय में है। आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आपके दर्शन को पूरा करने के लिए भेजने की अपेक्षा परमेश्वर आपको एक और तैयारी के काल में भेजेगा जहाँ परमेश्वर आपके जीवन के अन्य क्षेत्रों में आपसे बातचीत करेगा। शायद इस काल में वह आपके हृदय की गूढ़ बातों को–आपके चरित्र और अनुशासन को सुदृढ़ करने के लिए काम करता है।

प्रत्येक काल आपको अगले काम के लिए तैयार करता है

विभिन्न काल जिनमें से होकर परमेश्वर आपको गुजारता है वे आपके जीवन के उदासीन वर्ष नहीं होते कि आप उनमें से निकले और भूल गए। बल्कि प्रत्येक काल जीवन के पुराने काल पर ही बनता है। वे बातें जो आप जीवन के इस काल में सीखते हैं, आपको अगली अथवा

भविष्य में आनेवाली चुनौतियों के लिए तैयार करती हैं। अतः जीवन का प्रत्येक काल महत्वपूर्ण है।

जब काल बदलता है तो बदलाव के लिए तैयार रहें

जब काल बदलता है और जीवन परिवर्तनीय होता है तब बदलाव आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए वर्तमान काल में आप किसी स्थान पर रह रहे हैं, जहाँ आपके कुछ मित्र हैं और आप किसी काम में लगे हैं। जब परमेश्वर उस काल को बदलता है जिसमें आप अभी हैं, तब परमेश्वर आपसे यह भी अपेक्षा कर सकता है कि आप नए स्थान पर जाएं, नए मित्रों को बनाएं और बिल्कुल नए काम में लग जाएं। तौभी आप में से बहुतों को ऐसा करना कठिन लगेगा क्योंकि आप अनजान से डरते हैं क्योंकि आप वर्तमान में जान-पहचान में ही आराम महसूस करते हैं। आपको अपने वर्तमान से भविष्य में बढ़ने के लिए तैयार रहना चाहिए जिसे परमेश्वर ने आपके लिए बनाया है।

आगे की ओर देखे और अगले काल के लिए तैयार रहें

कभी-कभी आपको मालूम रहता है कि आपके जीवन का काल एक विशेष समय पर बदलेगा। उदाहरण के लिए, आज से कुछ महीनों के बाद आप अविवाहितपन से विवाहित जीवन में प्रवेश करेंगे। चूँकि आप जानते हैं कि यह बदलाव ज्यादा दूर नहीं है, आप इसके लिए जितना सम्भ्व होता है आप योजना बनाते हैं और तैयारी करते हैं। जब बदलाव का समय आए तो आप आश्चर्य में न पड़ें। इस विषय पर उन सब बातों पर ठीक से विचार करें और ठीक से तैयारी करें जो इस बदलाव को प्रभावित करती हैं।

आप जिस काल में हैं उसमें आनन्दित रहें

आपको जीवन के प्रत्येक काल में आनन्दित रहना सीखना चाहिए। जीवन के कुछ काल दूसरे कालों की तरह अच्छे नहीं होते हैं। तौभी, आपको इस यात्रा का आनन्द लेना चाहिए क्योंकि प्रत्येक काल का एक मूल्य है।

"कायरोज़" कब होता है?

जैसा कि पहले बताया गया है "कायरोज़" उन सब घटनाओं का संग्रह है जो एक उपयुक्त समय बनाता है। व्यक्तिगत बातों में, "कायरोज़" परमेश्वर की अपेक्षा हम पर अधिक निर्भर है। उदाहरण के लिए आप अपने व्यापार अथवा सेवा करने के लिए "कायरोज़" की प्रतीक्षा करते रहे हैं। उस व्यक्ति के लिए जो सेवा आरम्भ करने की प्रतीक्षा कर रहा है। "कायरोज़" क्षण तभी आएगा जब परमेश्वर देखेगा कि वह व्यक्ति तैयार किया गया है। यह तैयारी उस पर निर्भर है कि वह कैसे अपने जीवन में परमेश्वर के व्यवहार के प्रति प्रत्युत्तर देता है। परमेश्वर तब तक प्रतीक्षा करेगा जब तब उस व्यक्ति में आवश्यक चरित्र, मन की शुद्धता, सही व्यवहार और सेवक का हृदय विकसित न हो जाए। जब परमेश्वर उसमें इन गुणों को देखेगा तब उसकी सेवा को आरम्भ करने हेतु "कायरोज़" क्षण आते हैं। परमेश्वर जब तक आवश्यक होगा, प्रतीक्षा करेगा। परमेश्वर कभी जल्दी में नहीं है।

अपने जीवन को निर्देशित करना

अपने अन्दर परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानें।

अपने जीवन की स्थितियाँ और घटनाओं को पहचानें।

परमेश्वर के आत्मा के चलन को निकटतम् होने वाली घटनाओं के साथ मिलाकर कदम उठाएं।

अपने जीवन के कालों के प्रति सम्वेदनशील रहें।

परमेश्वर आपको तैयारी के काल में ले जाएगा।

प्रत्येक काल आपको अगले काम के लिए तैयार करता है।

जब काल बदलता है तो बदलाव के लिए तैयार रहें।

आगे की ओर देखें और अगले काल के लिए तैयार रहें।

आप जिस काल में हैं उसमें आनन्दित रहें।

5

समय को पुनःस्थापित करना

"जिन वर्षों के उपज अर्बे नामक टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नामक टिड़्डियों ने अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैंने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुमको भर दूँगा" (योएल 2:25)।

"वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है जिससे तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है" (भजनंसहिता 103:5)।

"हे प्रियो यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है" (2 पतरस 3:8)।

अब अन्त में समय को पुनस्थापित करने के विषय में हम कुछ तथ्य देंगे। हम ऐसे समय में रह रहे हैं जिसे अधिकांश बाइबल के विद्धान पुनःस्थापना का समय कहते हैं, जिसकी चर्चा प्रेरितों के काम 3:19-21 में की गई है। यह आज की कलीसिया में पूरा हो रहा है जब इसे बड़ी सामर्थ और महिमा मिल रही है। तौभी जैसा हम वचन में पाते हैं, जब जब परमेश्वर पुनःस्थापना का काम करता है, वह वृद्धि भी करता है (अय्यूब 42:10)। जिसे परमेश्वर पुनःस्थापित करता है वह पहले से अधिक बेहतर और बड़ा बनता है। यह बात समय के विषय में भी सत्य है। समय परमेश्वर को नियन्त्रित नहीं करता है परन्तु परमेश्वर समय को नियन्त्रित करता है। परमेश्वर की घड़ी में समय उससे भिन्न होता है जिसके हम आदी हैं। हममें से कुछ के जीवनों को टिड्डियों ने खा लिया है। इस सन्दर्भ में टिड्डियाँ बर्बादी, विनाश और निष्फलता की प्रतीक हैं। परमेश्वर उन वर्षों (समयों) को पुनः स्थापित कर सकता है जो बर्बाद हो गए हैं (कारण चाहे कुछ भी क्यों न हो)। वह अपने पवित्र आत्मा के पूरा एक वर्ष में उतना काम करने के योग्य बना सकता है जितना हम

एक हजार वर्षों ने भी अपने प्रयासों से नहीं कर सकते। हम उस समय के लिए जो हमारे जीवनों में बर्बाद हो चुका है, परमेश्वर की ओर देख सकते है।

परमेश्वर पुनः स्थापित कर सकता है।

जब कभी परमेश्वर पुनः स्थापित करता है, वह बढ़ाता भी है।

समय परमेश्वर को नियंत्रित नहीं करता है, परन्तु परमेश्वर समय को नियंत्रित करता है।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

नोट्स

क्या आपने कभी रुक कर सोचा है कि परमेश्वर के पास भी एक घड़ी है जो संसार के आरम्भ से बल्कि भूतकाल के अनन्त से–अज्ञात समय से वर्तमान तक चल रही है? क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर के पास हम सब के जीवनों के लिए एक घड़ी है? क्या आपने कभी प्रयास किया है अथवा चाहा है कि आप अपने जीवन को केवल अपनी कलाई पर लगी घड़ी अथवा दीवार घड़ी के अनुसार ही नहीं परन्तु परमेश्वर की घड़ी के अनुसार ढालें? आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के समय के अनुसार काम करें और आप किसी विशेष समय में वह कर रहे हैं जो वह चाहता है कि आप करें अथवा आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के द्वारा नियुक्त समय पर वह बनें जो वह चाहता है कि आप बनें?

ये चुनौतीपूर्ण प्रश्न हैं और यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन को परमेश्वर की घड़ी के द्वारा ढालें। यह पुस्तक व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के समय को हमें पहचानने और समझने में सहायक होगी।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

ALL PEOPLES CHURCH